E-Learning Study Material

By Prof (DR) YADWENDRA SINGH
MAHARAJA COLLEGE, ARA
VKS UNIVERSITY, ARA, BIHAR

B.A. Economics Hons First Year

Q- Describe Modern Theory of Distribution

"The Modern Theory of Factor Pricing provides a satisfactory explanation of the problem of distribution. It is known as the demand and supply theory of distribution... Prices paid for productive services are like any other price and they are basically determined by Demand and Supply conditions."

Scanned with CamScanner

वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त एकपक्षीय है। इसमें केवल साधन की माँग पक्ष की ही व्याख्या की गयी है, साधन की पूर्ति पक्ष को भुला दिया गया है। वितरण का आधुनिक सिद्धान्त (Modern theory of Distribution) यह बताता है कि जिस प्रकार से किसी वस्तु का उस वस्तु की माँग और पूर्ति की दशाओं के द्वारा निश्चित होता है, ठीक उसी प्रकार से उत्पत्ति के साधनों की कीमत या साधनों की माँग एवं पूर्ति के द्वारा निश्चित होती है। यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि उत्पत्ति के विभिन्न साधनों की माँग तथा पूर्ति की दशाओं में कुछ अन्तर पाया जाता है। इसलिए उत्पत्ति के प्रत्येक साधन के पुरस्कार-सिद्धान्त में भी भिन्नता होती है।

साधनों के मूल्यनिर्धारण तथा वस्तु के मूल्यनिर्धारण के बीच थोड़ा सा अन्तर है। जो निम्नांकित है-

(i) किसी भी वस्तु की माँग प्रत्यक्ष रूप में की जाती है अर्थात् उपभोक्ता के लिए वस्तु की माँग प्रत्यक्ष माँग होती है। वस्तु की माँग का आधार वस्तु की उपयोगिता होती है जबकि साधन की माँग व्युत्पन्न माँग (Derived Demand) होती है अर्थात् साधन की माँग उसके द्वारा उत्पादित वस्तु की माँग के ऊपर निर्भर करती है।

(ii) वस्तु की पूर्ति हमेशा वस्तु की उत्पादन लागत अथवा उसकी मौद्रिक लागत पर निर्भर करती है परन्तु उत्पत्ति के साधनों की पूर्ति अवसर लागत (Opportunity Cost) पर निर्भर करती है।

(iii) वस्तु की माँग तथा पूर्ति के सम्बन्ध में सामाजिक तथा मानवीय तत्वों को ध्यान में नहीं रखा जाता

Scanned with CamScanner

है। जबकि उत्पत्ति के साधनों के सम्बन्ध में सामाजिक व मानवीय तत्वों को भी ध्यान में रखना होता है।

उपर्युक्त अन्तरों के होते हुए भी साधनों का मूल्य निर्धारण वास्तव में मूल्य निर्धारण का ही एक अंग है। साधन की कीमत भी उसी बिन्दु पर तय होती है जिस बिन्दु पर वस्तु की माँग तथा पूर्ति की शक्तियों से वस्तुओं का मूल्य निर्धारित होता है।

वितरण के आधुनिक सिद्धान्त की मान्यताएँ :-
यह सिद्धान्त निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है :-

(i) अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार का पाया जाना
(ii) उत्पादन में उत्पति ह्रास नियम का लागू होना
(iii) साधनों की इकाइयों का समरूप (Homogeneous) होना
(iv) साधनों का एक दूसरे के साथ पूर्ण स्थानापन्न होना
(v) साधनों का पूर्ण विभाजनीयता

उपरोक्त मान्यताओं के आधार पर साधन की साधन की माँग-पूर्ति की व्याख्या इस प्रकार है-

साधन की माँग (Demand of a Factor) :-
उत्पत्ति के साधन की माँग उस साधन की सीमान्त उत्पादकता के ऊपर निर्भर करती है। किसी साधन विशेष की एक अतिरिक्त इकाई के प्रयोग से कुल उत्पादन में जो अतिरिक्त वृद्धि होती है वह अतिरिक्त वृद्धि उस साधन की सीमान्त उत्पादकता है और एक फर्म किसी साधन विशेष की इकाई को उस सीमा तक प्रयोग में लायेगी जब तक कि 'साधन की सीमान्त उत्पादकता का मूल्य' (VMP) 'साधन की सीमान्त लागत (MFC) के बराबर

न हो, जाए। यदि साधन की 'सीमान्त उत्पादकता का मूल्य' (VMP) 'साधन की सीमान्त लागत' (MFC) से अधिक है तो फर्म को साधन की अतिरिक्त इकाई के प्रयोग करने पर लाभ होगा। अतः जब तक साधन की 'सीमान्त उत्पादकता का मूल्य' (VMP) 'साधन की सीमान्त लागत' (MFC) से अधिक होगा तब तक एक फर्म उत्तरोत्तर साधन की माँग करेगी। उस बिन्दु के बाद साधन की अतिरिक्त इकाई की मांग करना बन्द कर दिया जाएगा जिस बिन्दु पर 'सीमान्त उत्पादकता मूल्य (VMP) साधन की सीमान्त लागत' (MFC) के बराबर होगा। अतः कोई भी फर्म किसी भी साधन को उसकी सीमान्त उत्पादकता के मुल्य से अधिक पुरस्कार नहीं देगी।

किसी भी साधन की माँग पर निम्नलिखित प्रमुख बातें प्रभाव डालती है :-

(i) साधन की माँग साधन के द्वारा उत्पादित वस्तु की माँग पर निर्भर करती है। अतः जब साधन के द्वारा उत्पादित वस्तु की माँग बाजार में बढ़ने लगती है तो फर्मों के द्वारा साधन की भी माँग बढ़ाई जाती है।

(ii) अन्य साधनों का मूल्य भी साधन विशेष की माँग को प्रभावित करता है। मशीनों की कीमत में वृद्धि होने श्रमिकों की माँग बढ़ जायेगी तथा घटने पर घट जायगी।

(iii) साधन की सीमान्त उत्पादकता में वृद्धि होने से साधन की कीमत तथा साधन की माँग दोनों में वृद्धि होगी।

Scanned with CamScanner